Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

February-2021, Volume : 07, Issue : 09, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

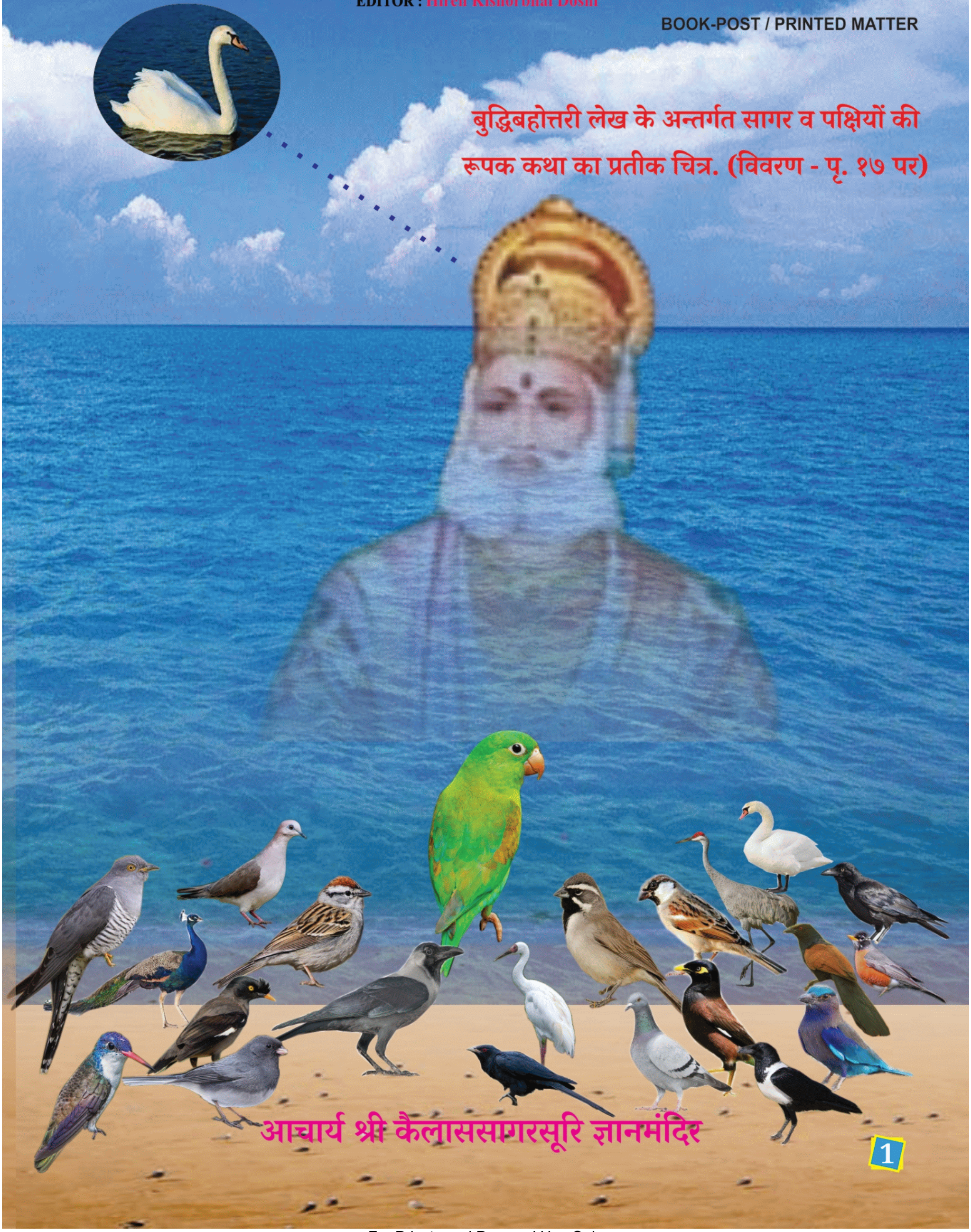

बुद्धिबहोत्तरी लेख के अन्तर्गत सागर व पक्षियों की रूपक कथा का प्रतीक चित्र. (विवरण - पृ. १७ पर)

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में पुष्पदन्त जैनसंघ अहमदाबाद में अन्नपूर्णा संकुल का भव्य उद्घाटन सम्पन्न.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-९, कुल अंक-८१, फरवरी-२०२१

Year-7, Issue-9, Total Issue-81, February-2021

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ रामप्रकाश झा, राहुल आर. त्रिवेदी

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ फरवरी, २०२१, वि. सं. २०७७, माघ शुक्ल चतुर्थी

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	६
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	७
४.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
५.	२ अप्रगट ऐतिहासिक कृतिओ	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	९
६.	बुद्धिबहोत्तरी	डिम्पलबेन शाह	१७
७.	धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोष	मुनिश्री पुण्यविजयजी	२८
८.	क्षमा याचना	डॉ. हेमन्त कुमार	२९
९.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	३१
१०.	समाचार सार		३२

वीना कहे हुं सतपुरुष, पर की पूरे आस ।
कौन कहत हे सूर कुं, घर घर करत प्रकाश ॥

प्रत क्र. १३८३०१

भावार्थ- महापुरुष बिना कहे ही दूसरों की आशा पूर्ण कर देते हैं। जैसे सूर्य को कौन कहता है कि घर-घर जाकर प्रकाश करो, फिर भी बिना कहे हर घर को प्रकाशित करता है।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की सुधामयी वाणी व स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त तीन अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत जैनधर्म के विशाल स्वरूप के साथ-साथ इसकी धर्मवर्तुलता पर प्रकाश डाला गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक 'Awakening' से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें मानव जीवन में धन के वास्तविक उपयोग के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा सम्पादित दो अप्रकाशित ऐतिहासिक कृतियों **"तेजसिंहगुरु भास"** व **"सुमतिसागरसूरि रास"** का प्रकाशन किया जा रहा है। इन कृतियों में संबंधित गुरु भगवन्तों के द्वारा किए गए विविध चातुर्मास व तपादि महोत्सवों का वर्णन किया गया है। तृतीय कृति के रूप में श्रीमती डिम्पलबेन शाह के द्वारा सम्पादित **"बुद्धिबहोत्तरी"** प्रकाशित की जा रही है। इस कृति में हंस और सागर के सम्बन्धों का वर्णन करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि कच्चे कानवाला स्वार्थी मनुष्य धूर्त्त पुरुषों की लुभावनी बातों में आकर अपने प्रिय पात्र को सदा के लिए खो देता है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के रूप में इस अंक में पुण्यविजयजी के द्वारा लिखित लेख **"कथारत्नकोश अने तेना कर्त्ता श्री देवभद्रसूरि"** का आगे का अंश प्रकाशित किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत महावीर चरित्र की रचना तथा देवभद्रसूरिजी के जीवन से सम्बन्धित शोधपरक मुद्दों का उल्लेख किया गया है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत श्री तीर्थभद्रसूरिजी द्वारा सम्पादित **"चरम केवली"** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है, जिसके अन्तर्गत जम्बूस्वामी से सम्बन्धित वैराग्यवर्द्धक साहित्यों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री शीतलनाथ स्वामी श्वे. मू. पू. जैन देरासर ट्रस्ट, सुरत
- श्री सुमनदीप विद्यापीठ, पीपरीया, वडोदरा
- श्री अनिल रणजीतमल जैन, अहमदाबाद
- श्री रोयल कोम्पलेक्स श्वे. मू. पू. जैन संघ, मुंबई
- श्री गांधीनगर श्वे. मू. पू. जैन संघ, गांधीनगर
- श्री साणंद सागर गच्छ कमिटी, साणंद
- श्री शाहपुर पांचपोळ श्वे. मू. पू. जैन संघ, अहमदाबाद
- श्री पार्श्व-प्रेम श्वे. मू. पू. जैन संघ, थाणे, मुंबई
- श्री आशीर्वाद पेलेस श्वे. मू. पू. जैन संघ, सुरत
- Melbourne Shwetamber Jain Sangh (MSJS)
  Melbourne, Australia

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुळ

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

आ उपरथी अवबोधवानुं के केवलज्ञानरूपात्मानी प्राप्ति ए जैनधर्म सेवननो मुख्य सिद्धान्त छे अने ए सिद्धान्तना सन्मुख संसारवर्ति मनुष्यो थाय तो तेओ अजर, अमर, शुद्ध, बुद्ध, निरंजन, निराकार, परमात्मरूप पोतानुं स्वरूप प्राप्त करीने अनन्त सुखमय बनी शके। आवी जैनधर्म सर्वज्ञात्मारूप दशा प्राप्त करवाने अनेक उपायोरूप पगथीआं छे अने तेनुं स्वरूप जैनशास्त्रोमां दर्शाववामां आव्युं छे। जो तेओनो गुरुगमपूर्वक सूक्ष्म दृष्टिथी अभ्यास करवामां आवे तो जैनधर्म साध्य, अनन्त, केवलज्ञान स्वरूपात्मामां पोते पोताने देखी शकाय अने विश्ववर्ति सर्वजीवोनो जैनधर्मनी अपरिमित अनन्त धर्मवर्तुळतानो जाहेरबोध आपवानो धर्मघोष करी शकाय।

उपर्युक्त जैनधर्मनी आराधना करवा तथा अन्य मनुष्योने तेनो लाभ आपवा जगतमां सर्वत्र जैनधर्मनो प्रचार करवा तथा कराववाने जैनधर्म तथा जैनोनी सेवा करवी जोइए।

जमानाना अनुसारे जैनधर्मने विशाल दृष्टिथी जगतमां प्रसारवा माटे लाखो गीतार्थो तरफथी आत्मभोग आपवामां आवे त्यारे कंइ विश्व मनुष्योना कानमां जैनधर्म शब्दनो ध्वनि जइ शके अने तेथी तेओ जैनधर्मना विचारो तथा आचारो संबंधी विवेक प्राप्त करी शके।

अमारा आत्मरूप जैनबंधुओ जागो, आपणा जैनधर्मनुं वर्तुळ हाल केटलुं अन्य लोकोना कल्पवामां आवे छे तेनो ख्याल करो अने वस्तुतः प्रयत्न करो। तमारा जेवा जैनधर्मना सांकडा विचारो नथी। विशालदृष्टिथी आगळ वधो। विश्वमां प्रवर्त्तता सर्वधर्मोमां जैनधर्मनी महान् तरीके गणना थाय एवुं सर्व करो।

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ६९४-६९५

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

Dhanam (wealth) with the prefix `अ' (a) is adhanam i.e.; it is no wealth at all. Dhanam (wealth) with the prefix `नि' (ni) is nidhanam i.e., it is death. Nidhanam means death. If we take the latter part of Dhana i.e., na, it is indicative of (abhava) absence or non-availability. Hence, the wealth i.e., Moksha which is found between the padas (feet of the Lord) of the akshara (word of the Lord) is the truest wealth. Incidentally, we may note that Ayuta also means ten thousand; Niyutha also means one lakh or ten million; and Parardh also means half the age of Brahma (i.e,, millions of years). The substance of this stanza is that wealth is useless and harmful; and that Moksha or salvation is the truest kind of wealth.

The devotee who desires the wealth of Moksha or salvation for himself and who has ephemeral wealth with him, will use it for the benefit of others. He gives away his wealth in charity, so that he may annihilate his desire to accumulate wealth. Little drops of water make the mighty ocean. Literally, it means, the ocean becomes an ocean when little drops of water join together. The ocean gives away its water to the clouds. The clouds cheerfully give water to the world in the form of rain. The earth itself without eating the food it grows, gives it away to farmers. Farmers with their heaps of food grain satisfy the hunger of people. Herein we can see the continuity of benevolence.

(Continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२ अप्रगट ऐतिहासिक कृतिओ

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

अत्रे प्रकाशित बन्ने अप्रगट कृतिओ अनुक्रमे लोंकागच्छने तथा तेनी विजयशाखाना पूज्योने आश्रयीने रचाई छे। आ बन्ने परंपराना संदर्भमां घणुं साहित्य लखायेलुं मळे छे तेथी तेनी अहीं पुनरुक्ति न करता ते गच्छोनी स्थापना अनुक्रमे लोंकाशाह वडे तेमज विजयदानसूरिजी वडे करायानी सामान्य विगत नोंधी शेष विगतो माटे वाचकोने जैन परंपरानो इतिहास तथा पट्टावली संग्रहादि ग्रंथो जोवानी अमे भलामण करीए छीए।

कृति परिचय

तेजसिंह गुरु भास- प्रस्तुत कृति मारुगुर्जर भाषामां रचायेली 'भास' संज्ञक रचना छे। अहीं कृतिना मंगलाचरणमां आदिनाथ प्रभुने नमस्कार करीने कविए मुनिश्रीना गुरुभगवंतना तथा तेमनी माताना नामनी ऐतिहासिक विगतो आलेखी कृतिवर्णनानो प्रारंभ कर्यो छे। आ वर्णनामां कविए मुनिश्रीनी प्रभावकतानी अने तेमां'य विशेषे तेमनी व्याख्यान प्रतिभानी तथा पुण्य प्रतिभानी वातो विगते रजू करी छे। खास आ पद्योमां मुनिश्रीना अमदावाद पधारता त्यां थती तपादिकनी आराधनानी, मीरपुरना पारेख धनराजनी पत्नि सुरबाई वडे छमासी तप करायानी तथा त्यारपछीना चातुर्मास माटे अहेमदपुरना संघवडे विनंति करायानी विगत ऐतिहासिक दृष्टिए महत्वपूर्ण छे।

आ सिवाय मुनिश्रीनी व्याख्यान पर्षदानी तथा बाई सुरबाईना गुणवैभवनी भासगत विगतो पण ध्यानार्ह छे। छेल्ले काव्यांतमां कविए "राजमल्ल" एवो स्वनामोल्लेख करवा पूर्वक कृतिरचना संवतने आलेखी काव्यनुं समापन कर्युं छे। अहीं कृतिकारनुं नाम जोता तेओ कोइ गृहस्थ हशे तेवुं अनुमान थाय छे। जो के जैन गुर्जर कविओमां के साहित्यकोशना (मध्यकालिन) खंडमां तेमना विशे कशी नोंध मळती न होवाथी ते अंगेनी तपास करी शकाय तेम नथी। कदाच कृतिनायक विशे तपास करीए तो तेमना प्रभावनी, तेमना वडे रचायेल कृतिओनी तथा तेमना परिवारादिकनी अन्य नोंधो मळे खरी। प्रस्तुत कृतिनो रचना समय वि.सं. १७२३ पोष सुदि १, रविवार छे।

सुमतिसागरसूरि रास - माँ सरस्वतीने नमस्कार द्वारा कृतिनी वर्णनानो प्रारंभ करता कृतिकारे सर्वप्रथम प्रभु वीरनी पट्टपरंपरामां थयेला विजयराजसूरिजीनी तथा तेमनी पाटपरंपरानी स्तवना करी छे। अहीं कृतिमां आलेखायेली ते परंपरा नीचे मुजब छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विजयराजसूरि-धर्मदासजी-खेम[सागर]सूरि-पद्म[सागर]सूरि-गुणसागरसूरि-कल्याणसागरसूरि-सुमतिसागरसूरि-विनयसागरसूरि ।

कृतिकारे परंपरानुं वर्णन करता नोंधेली पू. खेम[सागर]सूरिवडे अकबर मीरनो प्रतिबोध करायानी तथा सुमतिसागरसूरिनी पछी विनयसागरसूरिजी गच्छपति थयानी विगतो अहीं विशेष ध्यानार्ह छे।

कृतिना बीजा तबक्कामां कवि वडे मुख्यतया सूरिजीना नांदडनगर पधारता प्रवर्तेला आनंदोत्सवनी वातो-विगतो दर्शावेल छे। जेमां कविए नांदडनगर क्यां आवेलुं छे ? त्यांनी राजवी कोण छे? सूरिजीना प्रवेशोत्सव माटे श्रीसंघे केवी केवी तैयारीओ करी छे? तेनुं सुंदर चित्रण कर्युं छे। खास करी आ वर्णनमांथी सूरिजीए नांदडनगरमां प्रभु आदिनाथना चैत्यने जुहार्यानी तथा श्रीसंघनी विनंतिथी ते चातुर्मास नांदडनगरमां ज कर्यानी ऐतिहासिक विगतो मळे छे।

कृति रचनानी संवतनो उल्लेख काव्यना छेल्ला तबक्कामां जोवा मळे छे। वि.सं. १७५३ भाद्रवा वदि २ मंगळवार अने रचना स्थळ नांदेड छे। अहीं कृतिकारे पोतानुं नाम प्रयोज्युं नथी तेथी तेमना विशे कशी तपास थई शके तेम नथी । जो के छेल्ले छेल्ले पण सूरिजीना गुणोनी स्तवना करता कृतिकारे सूरिजीना माता-पिताना नामनी जे दस्तावेजी नोंध रजू करी छे ते ध्यानार्ह छे।

खास-आ बन्ने कृतिओनुं संपादन आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबानी हस्तप्रतोना आधारे थयुं छे। तेजसिंहगुरु भास माटे प्रत क्र. ७६५७४ अने सुमतिसागरसूरि रास माटे प्रत क्र. ७५५३४ नी आ बन्ने हस्तप्रतोनी नकल आपवा बदल ते संस्थाना व्यवस्थापकश्रीनो खूब खूब आभार।

राजमल्ल कृत

(१) तेजसिंह गुरुभास

॥६०॥ श्री गुरू(रु)भ्यो नमः ॥

प्रथम जिणेसर प्रणमीके, गास्युं श्रीगछनायक रे।
भास भणीस सुहामणी, सब विध के गुरू(रु) लायक रे ॥१॥
गुणनिध(धि) गणि गुण गाईए(आंकणी)
श्री**केसवजी** के पाटवी, लखमादे का नंदा रे।
मुनिवरमांहे सोभही, जिमुं[1] तारो में चंदा रे ॥२॥ गुण...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विघन-निवारण तारण, **तेजसिंघ** मुनिंदा रे।
याहि[२] ते मिथ्यातरूपी ए, भाजइ गयंद के वृंदा रे ॥३॥ गुण...

जिउं ध्वनि सुनि(णि)कइ मोर की, दउर जाह(य) भुवं(जं)गा[३] रे।
ऐसइ व्याख्यान सुनत ही, नासइ पाप के अंगा[४] रे ॥४॥ गुण...

सिद्धांत जब मू(मु)खतइ कहे, वांणी अधिक रसाला रइ(रे)।
तीर्थंकर जानुं देखीए, भविजन होहि(इ) न(नि)हाला रे ॥५॥ गुण...

श्रावक चउसठि इंद्र भा(भए), छपनकुमारी जानुं बाइ रे।
करहि[५] मोछव[६] अति घणो, दिन दिन अधिक सवाइ रे ॥६॥ गुण...

रथ बेठो इक आवहि, वांद्या कोडि कल्यांणो रे।
रथ की छबी ऐसइ छाजइ{ही}, जानुं एहि[७] विमाना(नो) रे ॥७॥ गुण...

सामग्री सोहइ घणी, दी(दी)से पोसहसाला रे।
बिठा च्यारू परषदा, वंदन करइ{हि} त्रिकाला रे ॥८॥ गुण...

श्रीजी की जइ मइ स्तुति करू(रुं), एता किहां मुझ ग्यांना रे।
बालक बांह पसारीनइ, जिम कहे सायर-मांना रे ॥९॥गुण...

किहां आंबो किहां आंबली, किहां रांक किहां राणा रे।
किहां खजूया[८] किहां चंद्रमा, किहां राह(हु) किहां भाणा[९] रे ॥१०॥ गुण...

त्रिभुवनवंदन **तेजसी,** मुनिराय के राया रे।
दरसन [अ]नुपम देखीके, हरखे रंग उपाया[१०] रे ॥११॥ गुण...

ईनही **जंबूदीप** में, **भरथ**खेत्र दीपंदा रे।
अहमदावाद नयर त(ति)हां, सर्व बूधि(बुद्धि?) करि सोभंदा रे ॥१२॥ गुण...

नर नारि रंगे रमें, देव गुरू(रु) गुण दाखे रे।
सेव करइ गुरू(रु) की घणी, मुख ते जय जय भाखे रे ॥१३॥ गुण...

श्रीगछपति के गुणतणी, गावे धर्म-धमाला[११] रे।
दांन पुन्य दया करइ, सुंदर रूप सुबाला रे ॥१४॥ गुण...

सुनहि सिधां(द्धां)त सझाय भणइ, तप उपवास छट्ठ तेलो(ला)[१२] रे।
च्यार पांच छ सात ही, जानुं दरीयावकार इला(?) रे ॥१५॥ गुण...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आठ दस आदे करे, पनरे वीस सवाइ रे।
मास चार छ जानी(णी)ए, अतिहि वे सुखदाइ रे ॥१६॥ गुण...

एकहि पोसे पडिकमणे, जानु जोति एह सोना रे।
पासे सू(सु)वास आवे भली, जानु गुलाबा की दोना[१३] रे ॥१७॥ गुण...

मीरापुर मनोहरू, **सुरबाई** तिहां राजे रे।
पारिख धन **धनराजइ** रे, 'ने आणंद उपम छाजा(जई) रे ॥१८॥ गुण...

सुरबाई तप आदरे, षट्मासी सू(सु)खकारी रे।
दरसन आवे देवता, छिनइमइ स्वर्ग विसारा(री) रे ॥१९॥ गुण...

कंकन धरम विराजही[१४], कुंडल जिनवर-आंणा रे।
जीवदया माला बनी, अतिअ हीर-मणी(णि)क वाना[१५] रे ॥२०॥ गुण...

चंदन सू(सु)मति लगावहि[१६], सील सू(सु)गंध पुफ(ष्फ)माला रे।
भाव-सिंगार करइ सदा, अतिहि दा(दी)नदयाला रे ॥२१॥ गुण...

यैह उपमा जे में कहुं, सुरबाई सूर[१७] समांनी रे।
वह तौ दिनही कुं दीपे, अहिनिस यह दीपमाला रे ॥२२॥ गुण...

बीजा(जी) उपमानइ कहुं, चंद्र-जोति सम बाइ रे।
वह तो निसे सोहे सही, यह तपनी अधिकाइ रे ॥२३॥ गुण...

तिनकौ मू(मु)ख देखी करी, पाप दोष सवि जाइ रे।
यह अनुपम अति भलो, तस घरि आनंद थाइ रे ॥२४॥ गुण...

अइसा नगर-पुन्यातमां[१८], धां(ध्यां)न करेही तुमारा रइ(रे)।
मन वच क्रम करि ध्यावही[१९], तोही होइ उध्यां(द्धा)रा रे ॥२५॥ गुण...

गछनायक सू(सु)खदायक, यह सबकी अरदास रे।
अहेमदपुर हरखइ कारी(करो), अबकी तुम चोमास रे ॥२६॥ गुण...

भाग(ग्य)वंत ते व[र?] पुरा, गछराय जिहां राजे रे।
सुर 'ने इंद्र विद्याधरा, जिन के रूपइ लाजे रे ॥२७॥ गुण...

राजमल्ल की तुम वीनती, करो प्रमांण[२०] कृपाला रे।
अमृत वांणि करि कहो, सब जग के प्रतिपाला रे ॥२८॥ गुण...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संवत् सतरसइ तेवीसे(**१७२३**), सुभ दिन आदित(त्य)वारा रे।
पोस शुदि एकम दिने, एह कह्यौ अधिकारा रे ॥२९॥ गुण...

इति श्री भासः संपु(पू)र्णं (णः)॥ लिखं(खि)तं ऋ.हीरचंद ॥

(२) सुमतिसागरसूरि रास

॥ढाल॥ *राग-सारंग ॥ अब म्हांरी कज्यां रे गंगाजल थिरक रह्यो-[ए देशी]*

सरसति सांमणि वीनवुं, मांगुं एक पसाव[२१] हो लाल।
विजेंगछरा गुण गावस्युं, आणी निर्मल भाव हो लाल ॥१॥
अब म्हांरी सहियां हे, श्रीगुरु वंदस्यां(आंकणी)

वीर जिनंद सांमीतणें, अट्ठावीसमें[1] पाट हो लाल।
तस पट श्री**विजेंराज**जी, जिणे कीयो धर्मनो थाट[२२] हो लाल ॥२॥ अ...

तस पट्ट श्री**धर्मदास**जी, धर्मधुरंधर धीर हो लाल।
तस पट **खेमसु(सू)रिंद**जी, प्रती(ति)बोध्यो **अकबर** मीर हो लाल ॥३॥

तस पट **पद्मसु(सू)रिंद**जी, मणिधारी गुरु मतिवंत हो लाल।
तस गछनायक गुणनिलो, **गुणसागर**जी गुणवंत हो लाल ॥४॥ अब...

तस पटनायक वंदीये, **सागरसूरि कल्याण** हो लाल।
तस गछनायक सोभतो, **सागर सू(सु)मति** सूं(सु)जांण हो लाल ॥५॥ अब...

तस पट सकल-सिरोमणी, महिमावंत अनूप हो लाल।
विनयसागर गुरु गणधारी, वंदै वड वड भूप हो लाल ॥६॥ अब...

सागर सू(सु)मतिसुरं(सूरिं)दजी के, **गोयमसो** अवतार हो लाल।
सूरिगुणे करि सोभतो, गुण छत्तीस भंडार हो लाल ॥७॥ अब...

नेंण[२३] कमलनी पांखुडी, नास्या[२४] उपम कीर[२५] हो लाल।
वदन विराजें सरसति, सोवनवरन(ण) सरीर हो लाल ॥८॥ अब...

महिमंडल प्रतिबोधता, आया[२६] **मालव** खंड हो लाल।
नांदड नगर पधारीया, जिहां जें(जै)नधर्म केरी मंड[२७] हो लाल ॥९॥ अब...

---

1. पाठ संदिग्ध जणाय छे। संभव छे के अट्ठावननी जग्याए अट्ठावीस लखाई गयुं होय तेम लागे छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नांदड नगर सू(सु)हांमणो, सोभा विविध प्रकार हो लाल।
देवीसिंघ तिहां राजवी, मानूं(नुं) इंद्रतणें अवतार हो लाल ।।१०।। अब....

गुरु आगम[न?] जांणी करी, हरख्या बाल गोपाल हो लाल।
वाजित्र वाज्या अति घणा, ढोल मृदंग कंसाल[२८] हो लाल ।।११।। अब...

श्रावक सहु सुखीया वसइ, साधइ पर-उपगार हो लाल।
समकितसूं(सु) गुण आदर्या, बारा व्रतना भार हो लाल ।।१२।। अब...[1]

पोले[२९] तोरण बांधीया, मानुं उगा सूरिज कोडि हो लाल।
झिगमग जोति[३०] सू(सु)हांमणी, झलकें[३१] होडांहोडि[३२] हो लाल ।।१४।। अब...

गज ऐरापति(वत?) सारिखा, हैवर[३३] करता हींस[३४] हो लाल।
रथ फरहर[३५] सिणगारीया, पायक[३६] अधिक जगीस हो लाल ।।१५।। अब...

गंगोदकसुं न्हाईया[३७], पह(हि)र पितांबर सार हो लाल।
अष्ट दि(दी)वा लेई निर्मला, पु(पू)ज्या जिन जयकार हो लाल ।।१६।।अब...

अर्घ(र्ध्य)[३८] उतारी गुण गाईया, पहिर्या सोल शृंगार हो लाल।
जीह[३९] पहिर्या उपम[४०] चढै, थांरी मही(हि)मा मेरु समांन हो लाल ।।१७।। अब...

आवो मिलो हे सहेलडी, चंद्रमुखी-शि(सि)रदार हो लाल।
मनगमती मृगलोचनी, इंद्राणी अनुहार हो लाल ।।१८।। अब...

विनेंवंती पिया-वालही, पहिरो सोल शृंगार हो लाला।
जिण पहिर्या उपम चढैं, थांहरी महीमा मेरु समान हो लाला ।।१९।। अब...[2]

श्रीसंघ मिलि(ली) चित्त चावस्युं[४१], चाल्या घणें मंडांण[४२] हो लाल।
इंद्रतणी प्रभुता करी, घुरें{ह} घणें नीसांण हो लाल ।।२०।। अब...

भगति-जुगती(ति) विधि साचवी, वांद्या श्रीगुरुना पाय हो लाल।
करो सुहागणि लुंछणा[४३], सोवनकलस वंदाय हो लाल ।।२१।। अब...

मणि माणिक उछालंता, गाजंतो श्रीसंघ हो लाल।
पाटंबरि[४४] बिछावतां, करता अति रसरंग हो लाल ।।२२।। अब...

1. अहीं लहियाथी गाथा नं.१३ रही गई हशे अथवा गाथा नं. आपवामां तेनाथी भूल थई हशे एवुं अनुमान थाय छे।
2. आ पंक्ति अहीं भूलथी फरी लखाइ होय तेवुं लागे छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीपु(पू)ज्य आया चोहटें[४५], कांई चोसरां[४६] चमर ढलाया हो लाल।
मंगल गावै गोरडी, मोतीडासुं थाल वधाया हो लाल ॥२३॥ अब...

श्रीपु(पू)ज्य आया देहु(ह)रे[४७], पु(पू)ज्या प्रथम जिनंद हो लाल।
भावन भाई[४८] भावसुं, कांई तोड्या कर्मना फंद हो लाल ॥२४॥ अब...

श्रीपु(पू)ज्य आया उपासरें, कांई वाज्या जंगी ढोल हो लाल।
बेठा तखत सिंघासणें, वाध्यो अधिको तोल[४९] हो लाल ॥२५॥ अब...

देसना दीधी जुगतिसुं, समझ्या जांण अजांण हो लाल।
पुन्य-प्रभावन अति करी, जांण्यो जन्म प्रमांण हो लाल ॥२६॥ अब...

श्रीसंघ मिलि(ली) वीनति करी, कीजे चतुर चोमास हो लाल।
संघ का मनोरथ पु(पू)रीयें, कीयें हरख उल्हास हो लाल ॥२७॥ अब...

वीनति मांनी भावसुं, कीधो हर्ष चोमास हो लाल।
कि(की)रति चिहुं दिस विस्तरी, भोजिग[५०] गावै रास हो लाल ॥२८॥ अब...

श्रावक विध सहु साचवें, पु(पू)ज्य प्रभावन सार हो लाल।
पोसा पडिकमणां करें, धन खरचें अति प्यार हो लाल ॥२९॥ अब...

इणि विध नेक प्रकारसुं, करें महोछव-सोभ हो लाल।
नांदड को श्रीसंघजी, वंदे बे कर ज्यो(जो)ड हो लाल ॥३०॥ अब...

धन **गोकल**जी-कुलतिलो, धन **लखमादे**रा नंद हो लाल।
संघ का मनोरथ पु(पू)रीया, चिरंजीवो विजेंगछ-चंद हो लाल ॥३१॥ अब...

लबधें **गौतम** सार(रि)खो, बुद्धे **अभयकुमार** हो लाल।
सीलें **थु(थू)लभद्र** सारिखा, थांहरी महिमा मेरु समांन हो लाल ॥३२॥ अब...

संवत् सत्तरे तरे(त्रे)पनइ(**१७५३**), भाद(द्र)व वदि दुदि(जि) भौम हो लाल।
रास रच्यो रलीआमणो, गावंता ओ(ऊ)लसै रोम हो लाल ॥३३॥ अब...

चिरंजीवो चिरजं(जी)वज्यो, थे जीवज्यो कोडि वरीस हो लाल।
नांदड की सब मिल(ली) श्राविका, युं नित नित देइ आसीस हो लाल ॥३४॥ अब...

॥ इति श्रीरास[:] संपूर्णः ॥ लिखितं ऋषि वस्तपालेन आत्मार्थे फागु[ण] वदि १३ दिने वनेडा सहर मद्धे(ध्ये?) । संवत् १७६४ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दकोश

१. जेम, २. जे, ३. सांप, ४. रक्षको, सेवको, ५. करे, ६. महोत्सव, ७. आव्युं, ८. आगीयो, ९. सूर्य, १०. मेळव्यो, ११. एक गुर्जर काव्य प्रकार, १२. त्रण उपवास, १३. छाब (?), १४. शोभे, १५. (शोभानी) अन्य सामग्री १६. लगाडे, १७. सूर्य(समान), १८. पुण्यपुरुष, १९. ध्यान करे, २०. मान्य, २१. कृपा, २२. समुदाय (अहीं विस्तारना अर्थमां), २३. नयन, २४. नाक, २५. पोपट, २६. आव्या, २७. शोभा, २८. मंजीराना प्रकारनुं एक वाद्य, २९. दरवाजो, ३०. ज्योति, ३१. प्रकाशित थाय, ३२. शरत करे, ३३. घोडा, ३४. हणहणाटी ३५. धजा(?), ३६. सैन्य, ३७. स्नान कर्या, ३८. पुष्पादिनी अंजली वडे करातो सत्कार, ३९. जे, ४०. गौरव, शोभा, ४१. उत्साहपूर्वक, ४२. साज सरंजाम पूर्वक, ४३. ओवारणा, ४४. रेशमीवस्त्र, ४५. बजारमां, ४६. चारे बाजु(?), ४७. जिनालये, ४८. भावी, ४९. तोर = अहीं प्रभाव अर्थमां हशे(?), तोल = वजन, ५०. भोजक.

❊ ♦ ❊

(अनुसंधान पृष्ठ २७ पर से)

शब्दकोश

१. राजस-राज, २. खवरि-खबर, ध्यान राखवुं, ३. मंत्रपद-मंत्रीपद, ४. वैन-वचन, ५. सैंण, सेंन-स्वजन, ६. भाइ-भावे, ७. विडारि-त्याग, ८. दीनौ-आप्युं, ९. थाग-पार, १०. बुहराइ-बोलावी, ११. बहोडि-?, १२. ठाढी-?, १३. रीव-चीस, पोकार, १४. मो-मारा, १५. विसन-विष्णु, १६. करेसी-करशे, १७. न्याव-न्याय, १८. इंद्री-द्वार-पेशाब वाटे, १९. लछमण-सारस?, २०. खट्टीयै-करवुं?, २१. छेह- दगो, २२. तीखे-तेजवंत, २३. तुरी-घोडा, २४. तोखार-तोखारिस्तानना पाणीदार घोडा, २५. चूडामणि-ते नामनो पोपट, २६. पाखती-पासे, २७. गुझ-मंत्रणा, २८. पठाए-मोकल्यो?, २९. छीलर-छीछरुं पाणी, थोडुं जळ, ३०. हेज-हेत, ३१. नाह- नाथ, ३२. विरची-नष्ट?, ३३. ठालौ-खाली, खोटुं, ३४. सूवटा-सुडलो, पोपट, ३५. त्यांसु-तेनाथी, ३६. गज(र्ज)-बोलीने, ३७. चवै-बोले, ३८. कूरमग्रीवा-काचबानी डोक?, ३९. कूच-पंथ कापी, ४०. टुकटुक-टगर-टगर.

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुशल मुनि कृत

बुद्धिबहोत्तरी

डिम्पलबेन शाह

अनंत जन्मो बाद महापुण्य योगे जीवने संज्ञीपणुं प्राप्त थाय छे। विचारवानी ताकात शुं छे तेनी महत्ता तो त्यारे ज समझाय, ज्यारे तेनी क्षमतानी अनुपस्थितिनी कल्पना कराय। माणस शून्यमनस्क बनी जाय छे, कंई समझातुं नथी त्यारे ते काउन्सेलिंग करावे छे। (आ काउन्सेलिंग प्रोफेशनल होय के मित्र, स्वजनादि द्वारा पण थतुं होई शके छे) दिमागीय कोषोनी कोई हानि थता के कॉमामां जतां औषधीय उपचार करावाय छे। तेथी समझाय छे के दिमागीय क्षमतानी उपयोगिता केटली छे। जे जीवोने मन छे ज नहीं ते जीवोनी जिंदगी केवी हशे तेनी कल्पना करवा जेवी छे। तेवा जीवोनी संख्या आ संसारमां अनंतगणी छे। बहु ज ओछा जीवोने विचारवानी ताकात मळी छे, सद् नशीबे ते जीवोमां आपणे पण छीये।

मन छे तो विचार छे, बुद्धि छे। आ बुद्धिनो सदुपयोग थाय तो सद्बुद्धि अने दुरुपयोग थाय तो दुर्बुद्धि कहेवाय छे। सही दिशानी समझ न होय तो व्यवहारभाषामां बुद्धिहीनता पण कहेवाय छे। बुद्धि कठिन परिस्थितिमांथी मार्ग काढी आपे छे अने दुर्बुद्धि माणसने कुतर्की बनावी दुर्मार्गे पण दोरी शके छे। बुद्धिने सद्बुद्धिमां अने बुद्धिहिनताने बुद्धिमत्तामां परिवर्तित करवानी ताकात सत् साहित्यमां छे। घणा महापुरुषोए एवा बुद्धिवर्धक साहित्यनी रचनाओ करी छे। जेमां विविध भाषाओमां हितशिक्षा रास, हितशिक्षा चौपाई, सिखामण सज्झाय, औपदेशिक हितशिक्षा, आध्यात्मिक हितशिक्षा, श्रावक हितशिक्षा बोल सज्झाय, यतिहितशिक्षा, शिशु हितशिक्षा, शिष्य हितशिक्षा, नारी हितशिक्षा, हितशिक्षावली, हितशिक्षा कुलक, हितशिक्षा गहुंली, हितशिक्षा गरबी, हितशिक्षाषट्त्रिंशिका, हितशिक्षा पच्चीसी, हितशिक्षा छत्तीसी आदि अनेक प्रकारोमां कृतिओ प्राप्त थाय छे। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबामां प्राप्त सुचनानुसार हितशिक्षा शब्दाधारित नामवाळी १८० थी अधिक कृतिओ नोंधायेली जोवा मळे छे। तेवी ज रीते बुद्धि, मूर्ख, सद्बोध जेवा शब्दोथी जोतां २०० थी पण अधिक कृतिओ जोवा मळे छे। पर्यायवाची अन्य शब्दो के विषयाधारित अन्य कृतिओ जोवा जईये तो तेनी संख्या घणी वधी जाय छे। आम तो समस्त सम्यग्साहित्य ज्ञान, बुद्धिवर्धक गणाय पण अहीं विशेष करीने शिखामण तरफ निर्देश करती कृतिओनी वात छे। आवी अनेक

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृतिओ प्रकाशित थई छे तो हजु घणी कृतिओ प्रकाशननी राह जोई रही छे। तेमांथी ज एक प्रायः अप्रगट रचनानुं अहीं प्रकाशन करवामां आवी रह्युं छे, जेनुं नाम छे **बुद्धिबहोत्तरी**। आ कृति बुद्धिनी महत्ता साथे घणी बधी व्यवहारिक हितशिक्षा आपी जाय छे। तेमां संग, स्वमान, अहंकार, ज्ञान, ज्ञानी जेवा मुद्दाओनो समावेश थाय छे। साथे शेठ-नोकर, अधिकारी-कर्मचारी, स्वामी-सेवक संदर्भे पण घणी वातो जोवा मळे छे। आ कृतिनो बे-त्रण वाक्योमां सार कहेवो होय तो कही शकाय के **'पोतानी बुद्धिने निर्मळ राखवी, दुर्जनोनी वातमां आववुं नहीं, बुद्धिमान, ज्ञानी लोकोनो आदर करवो अने पोताना आश्रितोनी सुख-दुःखनी चिंता करवी"।**

कृतिनी एक खासियत ए छे के तेमां लोकरूढिथी चाली आवती रूपककथानो सहारो लई शिखामण आपवानो प्रयास कर्यो छे। जेम के लोकप्रसिद्ध ग्रंथ हितोपदेशनी प्रसिद्ध पंक्ति "कथाच्छलेन बालानां नीतिस्तदिह कथ्यते" अर्थात् कथाना माध्यमथी बाळ जीवो उपदेशनीतिने समजी शके छे अने जेथी सामान्यजन सरळताथी तेना उद्देश्यने पामी शके।

आम कृति समझाय तेवी छे छतां केटलाक शब्दो अघरा पण छे। वाचकने समझवामां सरळता रहे ते माटे अमें शब्दकोश आप्यो छे। कृति परिचयमां कथासार अने बोधरूप मुद्दाओनुं अवतरण पण करीने आप्युं छे। आशा छे के आटला परथी वाचक कृतिना हार्दने पामशे अने सार ग्रहण करी पोतानी बुद्धिने निर्मळ करी शकशे।

कृति परिचय

कृतिनी रचना वि.सं. १८३९मां थयेल छे अने भाषा पुरानी हिंदी प्रकारनी जणाय छे। कृतिनो विषय बुद्धिनी महत्ता दर्शावनारो तथा गाथा प्रमाण ७२ होवाथी कृतिनाम 'बुद्धिबहोत्तरी' सार्थक थाय छे। सर्वसामान्य बाळजीवोना बोध माटे कर्ताए लोकरूढिथी शैवमत प्रसिद्ध समुद्र, टींटोडी अने हंसनी दंतकथानो सहारो लीधो छे अने गाथा २२मां **'सिवमैं सुणीयै ए कथा'** कहीने आ दृष्टांत शैवमतानुसारी छे, तेवी स्पष्टता पण कविए करी छे। बोध माटे पंचतंत्र जेवा ग्रंथोमां पशु-पक्षी आदिनी रूपक कथाओ जोवा मळती होय छे। सामान्यजनोना बोध माटे आवी काल्पनिक कथाओनो सहारो लेवातो होय छे अने तेना माध्यमे कोई विशेष आध्यात्मिक, सामाजिक, मार्गानुसारी के मानवतानो संदेश आपवानो प्रयास करातो होय छे। प्रस्तुत कृतिमां पण तेम ज जणाय छे। कृतिनी भाषा आम तो समझाय तेवी छे छतां कंईक कथासार अहीं आपीये छीये-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कथासार- भरतक्षेत्रमां सिंघल द्वीपनी फरते सागर छे। नयनरम्य कुदरतनी भेट समान आ सागरना तटे सूर्योदय थतां ज पक्षीओनी घणी जात आनंदित हैये कलरव करती बेसे छे अने सागर पण तेमनुं खुल्ला हृदये भरणपोषण करे छे। सौ पक्षीओ माटे प्रेम धरावनार राजा एवा सागरे गुणवान अने सहुनुं हित चाहनार एवा हंसने मंत्री पद आप्युं अने अन्य पक्षीजाते ते वधाव्युं।

'सारा कार्यमां सो विघ्नो' ए उक्तिने सारस नामनुं पक्षी साचुं ठेरवे छे। सारस सागरने खोटा मार्गे दोरी कहे छे के- हे महाराज ! अन्य पक्षीओ तो माछला खाई गुजारो करे छे ज्यारे हंस तो कीमती मोती खाय छे। आ रीते तो आपनो खजानो खाली थई जशे। हंस आपनो हितेच्छु नथी। आ आपना साम्राज्यनुं शुं रक्षण करवानो। एनो त्याग करवो जोईये। 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' ए उक्ति थकी काचा कानना सागरे हंसने छोडी सारसने बहुमान पद आप्युं।

हंस सागरने त्यजी मानसरोवर आवे छे। बुद्धिनिधान हंसने मानसरोवर मान आपे छे। पोताने भाग्यशाळी समजी मानसरोवर राजसभामां हंसने स्थान आपे छे। खुशीथी बधा हंस मानसरोवरमां कल्लोल करे छे।

आ बाजु हंसना वियोगमां अन्य पक्षीओ निराश छे। तेओ सागरने विनंती करे छे के राजसभानी शोभा हंस छे । बधा पक्षीओ तेने चाहे छे, एक सारस जेवा दुर्जनना कहेवाथी बधाने अन्याय न करशो वगेरे सागर साथेनो पक्षीओनो संवाद कर्ताए खूब ज सरस रीते वर्णव्यो छे।

पक्षीओ द्वारा सागरने समझावामां टींटोडीनी कथानो पण उल्लेख थयो छे। ते आ प्रमाणे छे- टींटोडी सागर तटे इंडा मूके छे। सागरनी लहेर आवतां इंडा पाणीमां वही जाय छे। पोताना इंडा न जोतां टींटोडी दुःखी थाय छे अने भारंड, गरूड आदि अन्य पक्षीओ समक्ष पोतानुं दर्द व्यक्त करे छे। सागर पासे पक्षीओ न्याय मांगे छे, पण उकेल न मळतां बधी पक्षी जात न्याय मेळववा ब्रह्मा पासे पोकार करे छे। ब्रह्मा सागरने पोतानो आधार गणावी न्याय न करतां तेमने विष्णु पासे मोकले छे। विष्णु कहे छे के- सागरनी पुत्री लक्ष्मी ते मारी पत्नी छे, तेथी ससरा एवा सागरने कंई पण कहेतां हुं लज्जा अनुभवुं छुं माटे तमे शिवजी पासे जाओ। छेवटे त्रणे देवो अगस्त ऋषि पासे जाय छे। सागरे करेला अन्यायनी वात सांभळी ऋषि सागरने समझावे छे। पण अहंकारी समुद्र तेने गणकारतो नथी। त्यारे कोपायमान थयेला ऋषि त्रण घुंटडामां समुद्रनुं पान करी जाय छे अने क्षणवारमां सागर सुकाई जाय छे। सागर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुकातां टींटोडी पोताना इंडा लई ले छे। जळ विना तरफडता माछला, काचबा वगेरे जळचर जीवोने जोईने देवो अगस्त ऋषिने विनवे छे अने ऋषि इंद्रिय वाटे ते जळने छोडे छे, जेथी समुद्रनुं बधुं पाणी खारुं थई जाय छे। आ उदाहरणथी पक्षीओ कहे छे के हे सागर आ रीते तारुं जळ खारुं थयुं छे। आम तो तुं महा बळवान छे। तें पृथ्वीने जळ वडे दाबी दीधी छे। तारा जेवो बळवान कोई नथी। आवा बळवान पण ज्यारे मोटा समूहथी विरुद्ध जाय छे त्यारे हारने पामे छे। **'सबला पिण हार्या कह्या, निबलां दीधी पीड'** निर्बळने पीडा आपवाथी सबळ पण हारी जाय छे। पक्षीओनी वात समुद्रने गळे उतरे छे अने चतुर चूडामणि पोपटने मानसरोवर जवा रवाना करे छे। पोपट मानसरोवर पहोंची हंसने मळे छे अने रीस दूर करी पाछा वळवानुं कहे छे। हंस सहमत न थई सागरने संदेशो पहोंचाडवा पोपटने कहे छे के- जेम भमराने फूलो घणां, तेम हंसोने सरोवर घणां छे। हेत विनाना अने पतंगीया जेवा काचा रंगना सागर जेवा स्वामीनुं मारे कोई प्रयोजन नथी। उत्तम पुरुषो एक वार बोले के डग भरे पछी पाछा फरता नथी।

हंस साथेनो वार्तालाप पोपट सागरने जणावे छे अने साथे कहे छे के सेवक उपर स्वामीनो प्रेम जो अधिक होय तो सेवक हरघडी सेवामां तत्पर रहे छे। बाकी साचुं मोती, मन अने शीयळ एकवार तूट्या पछी संधातां नथी।

कृतिमां संदर्भित बोधदायक कईंक अंशो आ प्रमाणे छे-

१. दुर्जननी वातमां आवीने मोटा लोको ज्यारे कोई निर्णय करे छे त्यारे थोडा माटे करीने घणुं बगडे छे।

२. जेम वरसाद नाना-मोटानो विचार कर्या विना बधे ज वरसे छे तेम महान व्यक्तिने मन बधा सरखा होय छे, नाना-मोटानो कोई भेदभाव होतो नथी।

३. बहुमतमां बळ होय छे, तेथी घणा(समूह)थी क्यारेय बगाडवुं नहीं। 'लोगविरुद्धच्चाओ'नो अर्थ अहीं चरितार्थ थतो जणाय छे। बीजुं ए के घणाने अन्याय थाय तेवुं करवुं नहीं। निर्बळने परेशान करवाथी बळवाननुं बळ घटे छे। निर्बळोनो समूह एक सबळने भारे पडी शके छे। जेम नानकडी सेंकडो कीडीओ एक सापने ताणी जाय छे।

४. जेम हंसोने सरोवर घणा अने भमराओने फूल घणा तेम सारा, बुद्धिमान अने ज्ञानी माणसोने आदरपात्र स्थान घणा होय छे। एटले ज कह्युं छे- **'विद्वान् सर्वत्र पूज्यते'।**

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५. जेम मोटी छाया माटे मोटा वृक्षनो सहारो लेवाय तेम मोटुं फळ मेळववुं होय तो मोटानो आश्रय लेवो जोईये।

६. जरूर पड्ये जेनो साथ न मळे ते माणसनो संग करीने शुं मतलब ।

७. उत्तम पुरुषो एक वार बोलीने पाळे छे अने पाछा फरता नथी ।

८. मन, मोती अने शील एक वार तूट्या पछी संधातां नथी।

९. समुद्रे अहंकार कर्यो, ऋषिनी वात न मानी तो सुकावानो अने खारा थवानो वारो आव्यो, तेम कोईए अहंकार करवो नहीं अने वडील हितेच्छुनी वात मानवी।

१०. कथामां समुद्र-पक्षीओनो, स्वामी-सेवकपणानो संबंध दर्शावी प्रस्तुत कृतिमां स्वामी, शेठ, अधिकारी वर्गना संबंधमां घणी वातो वणी लेवाई छे। जेमके- जे शेठ के अधिकारी स्नेह विनानो होय, पतंगीया जेवा काचा रंगनो होय, जरूर पड्ये काममां न आवतो होय, जेना वाणी-वचननुं कोई ठेकाणुं न होय, आपस्वार्थी होय, हैया अने होठथी समुद्रनी जेम खारो होय, अंदरथी कपटी होय, सेवक के आश्रितोनी पीडाने समझी न शकतो होय, खाली खोटां वचन आप्या करतो होय तो तेवो स्वामी, शेठ, अधिकारी (बॉस) शुं कामनो ? जे सेवकनी तकलीफने समझी सकतो होय अने निवारण करी आपतो होय ते ज साचो स्वामी छे। जे जरूर पड्ये दूर हटी जाय तेने स्वामी केम कहेवाय ? जो स्वामीनो सेवक प्रत्ये प्रेमभाव अधिक होय तो सेवक पण स्वामी प्रत्ये हमेशां कार्य हेतु तत्पर रहे छे।

(उपर प्रमाणेनी विशेष बोध सामग्री पुरी पाडती गाथाओ- १९, २१, ३९, ४७, ४८, ४९, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६३, ६४, ६५. ६६. ७०. ७१.)

विशेष तो आ कृति विषे शुं कहीये, कर्ताए पोते ज लखी दीधुं छे के 'श्रोताजननै द्राख' आ कृति श्रोता माटे द्राक्ष जेवी मीठी छे।

कर्ता परिचय

खरतरगच्छ क्षेमशाखाना रतनविमलना शिष्य मुनि कुशल आ कृतिना कर्ता छे। कर्तानो समय कृतिनी रचना उपरथी वि.सं. १८३९ नो जणाय छे। ते सिवाय कर्तानी अन्य रचनाओ के शिष्य परिवारादिनी माहिती उपलब्ध थई शकी नथी ।

प्रत परिचय

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां प्रस्तुत कृतिनी बे हस्तप्रतो संग्रहित

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छे। तेमांथी हस्तप्रत क्रमांक -४४५२८ वधु सारी जणातां संपादनार्थे लीधी छे। त्रण पत्रो धरावती आ प्रतमां अन्य पेटाकृति न होतां मात्र आ एक ज कृति लखायेल छे। प्रतमां मध्यफुल्लिका छे। गाथांको गेरु-लाल रंगथी अंकित थयेल छे। प्रतना अक्षरो सुवाच्य अने सुंदर छे। क्यांक-क्यांक अक्षरोनी स्याही खरी पडी छे छतां अक्षर ख्यालमां आवी जाय तेम छे। प्रतिलेखक, लेखनकाळ अने लेखनस्थळ विशे कोई उल्लेख नथी। लेखन उपरथी प्रतनो समय वि.सं. १९वी पूर्वार्ध जणाय छे।

बुद्धिबहोत्तरी

भरतषेत्रमांहे भलो, स्थांनक अति परधांन।
सिंघल दीप तसु नांम है, सायर अति सुप्रधांन ॥१॥

सायर तिहां राजस[१] करै, बैसे बहु पंख जाति।
सायर अपने चित्त करि, लेवै खवरि[२] प्रभात ॥२॥

पंख जाति क्रोडां तिहां, आय सेवै सुप्रभाति।
भरणपोषण सबको करै, सेवै दिन नै राति ॥३॥

सायर दीनो मंत्रपद[३], हीयै विचारी प्रेम।
हंस वडो गुणराज इक, सबकुं चाहै खेम ॥४॥

पंख जाति सबमै अधिक, सिरै कर्यो महाराव।
हंस बध्यौ मंत्री तिहां, बहु परिवार सुभाव ॥५॥

सारस इक राजा प्रतें, आइ कहै इक वैन[४]।
हंसां खायौ राज तुम्ह, ए नही प्रभु के सेंन[५] ॥६॥

अवर सबे मच्छी चुगै, इनकुं मोती भाइ[६]।
देखि देखि मोती सिरै, चुगे सहू महाराइ ॥७॥

रखवारी ए क्या करै, इनकुं देहु विडारि[७]।
कांने काचा राजवी, मांनी वात विचारि ॥८॥

हंस छोरि सारस प्रतें, दीनौ[८] अति बहुमांन।
देसनिकारौ हंस पें, लीए गांम पुर थांन ॥९॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हंस चले तिण ठांमथी, आए बहु परिवार।
मांनसरोवर तुरत ही, आवी कीध जुहार ॥१०॥

मांनसरोवर हंस पें, उठ दीनो सनमांन।
उतरो तुम वो धांम है, तुम हौ बुद्धि निधांन ॥११॥

आए सो कीनी भली, बडे हमारे भाग।
राजसभा सोभै अधिक, तुम गुण कौ नही थाग[९] ॥१२॥

मांनसरोवर हंस सब, बैठा करै कलोल।
बहु सुख मानै चित्त मै, करै अधिक उल्लोल ॥१३॥

पाछैं सब पंखिन मिली, अरज करै महाराइ।
हंसन कौं बुहराइ[१०] ल्यौ, सब कै मैत्री भाइ ॥१४॥

राजसभा श्रृंगार है, बैठा सोहै पास।
तिणसुं तांणि न तोडीयै, करीयै हीयै बिमास ॥१५॥

ज्यां बैठां तूं उजलौ, सोभा देस प्रदेस।
त्यांसुं अमरस नांणीयै, आणंद करौ हमेस ॥१६॥

सायर हंस मनाइ ल्यै, अब ही जांण म देह।
सुगुण सनेहां मांणसां, आलैं पडिस्यै रेह ॥१७॥

राजन हंस बहोडि[११] ल्यो, नैडा ही जावंत।
ज्युं ज्युं भुंइ अलगी पडै, त्युं त्युं भारी हुंत ॥१८॥

सायर दुरजन कै कहै, मोटा न धरै रीस।
थोडै कारण स्वांमि तुं, घणौ विगाडण ईस ॥१९॥

अंब सोभै परिवारसुं, फल पिण सायर मिट्ठ।
महूय फलै पति खोइ कै, सायर मुहूय अनिट्ठ ॥२०॥

सबसुं प्रीति वढाईयै, सायर दीजै सुख्ख।
गिरवां कै सब सारिखा, जलधर न धरै रुख्ख ॥२१॥

सिव मैं सुणीयै, ए कथा टींटोडी निज इंड।
समुद्र तटै मेल्या, तुरत बैठी करै घमंड ॥२२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सब लै पवन प्रयोग, तें सायर उठे तरंग।
जलधि नीर में बहि गए, परवस पुहचे संग ॥२३॥

टींटोडी आई तबें, पेखै नही संतान।
मोह वसैं अति सोर करि, दुख धरै असमांन ॥२४॥

पंख जाति आगै खरी, ठाढी[१२] करन पुकार।
विन अपराधैं बालह मली, नेइ नह नीयार ॥२५॥

सायर पास दिवाईयै, तुम पंखी हम जात।
तुम हौ न्यात दिवाकरु, तुम आगै विललात ॥२६॥

भारंड पंखी अनड फुनि, गरुड पंख पें आइ।
न्याव करौ हम जलधि कौ, सायर करै अन्याय ॥२७॥

हम गरीब के वालऊं, लीने सायर छीन।
औरन की रिख्या करै, उदरैं राखै मीन ॥२८॥

हम अपराध कहा कर्यौ, इनकुं आवै चीत।
दोष कर्यौ सो दाखवौ, तुम हि हमारे मीत ॥२९॥

सब पंखी मिल कै गए, व्रह्मा कै गृहद्वार।
आसन व्रह्मा समुद मै, बैद उचारे च्यार ॥३०॥

व्रह्मा आगैं भेद सब, भाख्यौ पंखी जीव।
सायर पास दिवाईयै, बालक करता रीव[१३] ॥३१॥

व्रह्मा कहै मो[१४] वस नही, हम इनकै आधार।
विसन[१५] करेसी[१६] न्याव[१७] तुम, वह सबकौ आधार ॥३२॥

अरब खरब पंखी गए, जिहां है विष्णु मुरार।
गरुड पंख आगें खरे, अरज करै किरतार ॥३३॥

विसन कहै सुसरा प्रतें, कहा कहुं मुख वैन।
हम घरि लछमी तस सुता, लज्या आवै नैन ॥३४॥

जावौ महेस आगैं तुरत, सो दिवरावै बाल।
तीनों देव मिलकै तुरत, अगस्त रिषीनै भाल ॥३५॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अगस्त रिषी बोले तबैं, किन कारन ए आज।
पंखी सब आगै खरें, करै बहुत आवाज ॥३६॥

सायर लीन चुराइकै, इन अबला के पूत।
दिवरावौ इहां आइ कै, तिहां आए अवधूत ॥३७॥

सायर पासें आइ कै, करे सबद इक दोइ।
द्यौ इनके बाल अबैं, कै द्यै है पति खोइ ॥३८॥

जलनिध कै मनमै नही, गाजै गुहिर अथाह।
रिष कोप्या तिणवार ही, तीन चलू मुखराह ॥३९॥

पीधो जल तप सगति सो, सोखांणौ सब नीर।
मच्छ कच्छ जल जीव ते, पावै अति बहु पीर ॥४०॥

टींटोडी ईंडा तुरत, लेई अपणै धांम।
आई सुख सों बाल ले, सीधा वंछित कांम ॥४१॥

देव सहू मिल वीनवै, रिष आगैं अरदास।
दुख पावै जल जीव ए, सबकों करौ उलास ॥४२॥

दया करी रिष नीर ते, छोड्यौ इंद्रीद्वार[१८]।
ता तें जल खारौ भयौ, जलधि भरांणौ वार ॥४३॥

तुम जल खारौ तिहां, भयौ सुण सायर महाराय।
इण कारण तुम हुकमसुं, आंणि पडावुं पाइ ॥४४॥

सायर तुम सम को नही, जोरावर जग मांहिं।
नीरैं करि दाबी धरा, बलीयो तो सम नांहि ॥४५॥

रतनाकर अधिकौ जगत, रतनविमल गुण खांणि।
चिंतामणिसुं तुम भरे, तुम सब गुन के जांण ॥४६॥

घणा जीव सब तें सबल, घण सम तूं पिण नांहि।
घणा मिलै तब लोह पिण, नीर हुंवै जगमांहि ॥४७॥

किहां फणिधर किहां कीटका, किहां लछमण[१९] किहां तीड।
सबला पिण हार्या कह्या, निबलां दीधी पीड ॥४८॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घणसुं बैर न खट्टीयै[२०], सायर इम जांणेह।
हंस मनावौ दौडिकै, घणां म देवौ छेह[२१] ॥४९॥

सायर मनहि विचारिकै, विद्या विसारद एक।
चूडामणि पोपट्ट अधिक, सब हूंती सुविवेक ॥५०॥

तेहनै तेडी तुरत ही, उठि दीनौ सनमांन।
जावौ मेरे साजनां, हंस मनावौ आंन ॥५१॥

असन वसन तीखे[२२] तुरी[२३], दीधा अरथ भंडार।
सायर राजा पाठव्यौ, साथे रथ तोखार[२४] ॥५२॥

सबल सफाईसुं चले, चूडामणि[२५] महाराय।
मांनसरोवर पाखती[२६], डेरा दीध वताय ॥५३॥

हंस मित्रसुं हिलमिले, कीनो गुझ[२७] अपार।
सायर तुमकुं तेडवा, हम हि पठाए[२८] य्यार ॥५४॥

हंसा रोस निवारीयै, स्वांमीसुं स्यौ रोस।
छीलर[२९] सोभ न पांमिस्यौ, नही कोइ नमैमोस ॥५५॥

हंस कहै रे मित्र सुणि, देस विदेस गयांह।
हंसानै सरवर घणा, कुसम घणा भमरांह ॥५६॥

कीजै कहा समुद्रकुं, हेज[३०] विहूणो नाह[३१]।
काचौ रंग पतंग कौ, खिण मै विरची[३२] जांह ॥५७॥

कांम पड्यां विरचै सही, वचन तणो नही ठाह।
सायर आपसवारथी, खारो मुख हीयाह ॥५८॥

कीजै कहा समुद्द कुं, अंतर कपटी जेह।
सेवक पीड न जांन ही, दगादार छै तेह ॥५९॥

कीजै कहा समुद्र कुं, ठालौ[३३] ही गाजंत।
भीड निवारै सेवकां, तो ते नाथ कहंत ॥६०॥

भीड पड्यां अलगौ हुवै, सेवकनै दुखदाइ।
हंस कहै रे सूवटा[३४], ते किम नाथ कहाइ ॥६१॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हंस कहै रे सूवटा, दुख देखाडण काज।
हमकुं तेडै नाथ तुम, कपट संवारै काज ॥६२॥

चूडामणि बोले तबैं, सुणौ हंस महाराज।
मोटो तरुवर सेवीयै, मोटी छाया काज ॥६३॥

गरज पड्यां रे सूवटा, भांजै नही का भीर।
काज सरै नही जिण थकी, त्यांसुं[३५] केहो सीर ॥६४॥

जावौ अपनै ठांम तुम, रांम रांम सब सैंण।
गज(र्जे?)[३६] के पाछा नां धसै, उत्तम के ऐ वैंण ॥६५॥

उत्तम जे नर मुख चवै[३७], पालै ते निरधार।
कूरमग्रीवा[३८] सम कह्या, अधम पुरूष सुविचार ॥६६॥

चूडामणि तब कूच[३९] करि, आए सायर तीर।
कही कथा हंसां तणी, सायर भए दिलगीर ॥६७॥

समझाए चूडामणी, सुण सायर महाराय।
भग्नचित्त सेवक किस्यौ, लोभी स्वांमि न थाय ॥६८॥

स्वांमि त्तिके परिवारनी, नित प्रति करै संभाल।
थोडा ही बहु जांणवा, एकमना रखवाल ॥६९॥

सेवक उपरि स्वांमिनौ, प्रेम अधिक जौ होइ।
तौ सेवक ते आगलैं, टुकटुक[४०] हूवौ जोइ ॥७०॥

मोती पू(फू)टौ नवि मिलै, भगौ मन न मिलेइ।
सिल फाटी संधै नही, त्युं मन न मिलै केइ ॥७१॥

बुद्धि बहोत्तर एक ही, खरतर खेम साख।
रतनविमल पाठक सदा, श्रोत्ताजननै द्राख ॥७२॥

एह संबंध श्रवणे सुणी, सीखै नित प्रति चित्त।
नंद अगनि सिध चंद्र वृष(वर्ष), कुशल करौ नित नित प्रत्त ॥७३॥

॥ इति श्री बुधिबहोत्तरी संपूर्ण ॥

(अनुसंधान पृष्ठ १६ पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोश

मुनि श्री पुण्यविजयजी

(गतांकथी आगळ...)

“तित्थम्मि वहंते तस्स भयवओ तियसवंदणिज्जम्मि।
चंदकुलम्मि पसिद्धो विउलाए वइरसाहाए॥
सिरि**वद्धमाण**सूरी अहेसि तव-नाण-चरणरयणनिही।
जस्सऽज्ज वि सुमरंतो लोगो रोमंचमुबहइ॥
तस्साऽऽसि दोन्नि सीसा जगविक्खाया दिवायर-ससि व्व।
आयरिय**जिणेसर-बुद्धिसागरा**यरियनामाणो॥
तेसिं च पुणो जाया सीसा दो महियलम्मि सुपसिद्धा।
जिणचन्दसूरिनामो बीओऽ**भयदेवसूरि** त्ति।
सिद्धंतवित्तिविरयण पगरणउवयरियभव्वलोयाण।
को ताण गुणलवं पि हु होज्ज समत्थो पवित्थरिउं॥
तेसिं विणेयस्स **पसन्नचन्दसूरि**स्स सव्वगुणनिहिणो।
पयपउमसेवगेहिं **सुमइउवज्झाय**सिस्सेहिं॥
संवेगरंगसालाऽऽराहणसत्थं जयम्मि वित्थरियं।
रइयं च **वीरचरियं** जेहिं **कहारयणकोसो** य॥
सोवन्निडयमंडिय**मुणिसुव्वय** १ **वीरभवण** २ रमणीए।
भरुयच्छे तेहि ठिएहिं मंदिरे **आमदत्तस्स**॥
सिरिदेवभद्दसूरीहिं विरइयं **पासनाहचरिय**मिमं।
लिहियं पढमिल्लुयपोत्थयम्मि गणि**अमलचन्देण**॥
काले वसुरसरुद्दे ११६८ वच्चंते विक्कमाओ सिद्धमिमं।
अणुचियमिह सूरीहिं खमियव्वं सोहियव्वं च॥

॥ इति श्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिपादसेवकश्रीदेवभद्राचार्यविरचितं पार्श्वनाथचरितं समाप्तम्॥”

देवभद्रीयपार्श्वनाथचरितप्रशस्तिः॥

(क्रमशः)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्षमा याचना

डॉ. हेमन्त कुमार

श्रुतसागर जनवरी, २०२१ अंक में प्रस्तुत "पाक्षिक सूत्र" की पुस्तक समीक्षा में हमने एक अभिप्राय लिखा था कि "यहाँ एक निवेदन करने की भावना हो रही है कि प्राचीन हस्तप्रतों को जिन ज्ञानभंडारों की ओर से प्राप्त किया गया हो उनका नामोल्लेख होता तो ज्यादा उचित रहता" जो कि हमारी भूल थी। जिसका हमें खेद है। वास्तव में उस समीक्षाधीन नई आवृत्ति में हृदयोर्मि के अन्तर्गत तो संपादक द्वारा प्रत के प्राप्ति स्रोत का योग्य उल्लेख किया ही गया था। सम्मानित पूज्य संपादक-संशोधकश्री को किसी भी प्रकार से ठेस पहुँचे यह हमारी कतई भावना नहीं रहती है, हमारे इस भूल भरे अभिप्राय से पुस्तक के पूज्य संपादक-संशोधक-प्रकाशक को हुई मानसिक-सामाजिक ठेस के लिए हृदय से क्षमायाचना करते हैं। आशा है, उक्त पुस्तक के पूज्य संपादक-संशोधकश्री असावधानीवश हुई हमारी इस भूल के लिए क्षमाप्रदान करेंगे। मिच्छामि दुक्कडम्।

यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना उचित रहेगा कि यह भूल इस वजह से हुई कि प्रस्तुत समीक्षा लिखते वक्त हमारे समक्ष इसी प्रकाशन की इसके पूर्व की संवत २०७३ की आवृत्ति भी थी। इस प्रथम आवृत्ति में चूंकि प्रत प्राप्ति स्रोत के रूप में किसी ज्ञानभंडार का नाम नहीं दिखा, अतः उपरोक्त उल्लेख हो गया । उस वक्त ध्यान नहीं रहा कि समीक्षाधीन नई आवृत्ति में संपादक महोदय द्वारा 'मारी हृदयोर्मि' में प्रत प्राप्ति स्रोत की स्पष्टता कर दी गई है।

मूलतः हमारे इस सूचन के पीछे हमारा इरादा एक स्वस्थ परम्परा की ओर ध्यान आकृष्ट करने का ही था, ताकि किसी को भी उस प्रत के मूल स्रोत तक जाना हो तो उसे पता चल सके। साथ ही तत्-तत् ज्ञानभंडारों के कार्यवाहकों को भी उनके श्रुतसंरक्षण के प्रयासों की सार्थकता का एहसास हो और उनका उत्साह वर्धन हो।

फिर भी हम यहां पुनः स्पष्टता करते है कि भले ही हमारा यह आशय हमें हमारे ही अज्ञानवश व निर्गुणतावश सही व निर्दोष लगा हो, लेकिन यह बात एकदम सही है कि ऐसा करते समय यह बात हम हमारे ध्यान में नहीं रख पाये कि ऐसा करने से हमारे द्वारा उत्तम गुणधारक श्रुत सेवा को समर्पित चारित्रात्मा की हमसे कहीं गंभीर अवहेलना हो रही है, एवं उनके द्वारा अनाभोग से ही हुई एक सामान्य क्षति के लिए कि, जिस बात को उन्होंने स्वयं ही अगली समीक्षाधीन आवृत्ति में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुधार लिया था, यह तथ्य ध्यान में लाये बिना ही, हम हमारा यह कथन कर रहे है। विचारने पर समझ में आता है कि हमारे इस कृत्य द्वारा ऐसे पवित्र चारित्रात्मा की अकेले की ही नहीं परंतु उनसे जुडे अन्य भी पूज्य आत्माओं के लिए व्यापक रूप से परेशानी के हम निमित्त बने है। साथ ही हम यह भी एकरार करते है कि हमारे द्वारा जिनशासन के लिए भी यह कोई गौरवप्रद बात नहीं हुई है। यह अवश्य ही हमारे द्वारा दुष्कृत्य हुआ है और हमारी निर्गुणता की ही प्रतीति करवाता है।

हमारे इस दुष्कृत्य के लिए हम पूज्य मुनिप्रवरश्री, उनके साथ जुडे हुए अन्य पूज्यवर्यों के प्रति एवं श्रीसंघ के प्रति नतमस्तक हो कर पुनः पुनः क्षमा याचना करते है एवं मिच्छामि दुक्कडं देते है। हम भरोसा दिलाते है कि भविष्य में यह बात हमेशा हमारे हृदय में रहेगी एवं इसका पुनरावर्तन न हो उसके लिए हमारी जागृति बनी रहेगी।

हमारी इस गंभीर क्षति की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए हम पूज्य पंन्यास प्रवर श्री भव्यसुंदरविजयजी के अंतःकरण से आभारी है। आशा है कि कृपावत्सल सभी पूज्यों की कृपावृष्टि भविष्य में भी हमारे ऊपर हमेशा होती रहेगी।

इसी दौरान हमारे ज्ञानमंदिर में हो रही हमारी ही एक गंभीर क्षति संस्था के प्रबंधकों के ध्यान पर आई है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर को भारत भर के अनेकों ज्ञानभंडारों से हस्तप्रतें भेंट स्वरूप प्राप्त हुई है। इन प्रतों को उन संघों ने ही सैकड़ों वर्षों से सम्हाल कर रखा था। उन संघों ने उनकी वह धरोहर समस्त श्रीसंघ के व्यापक रूप से उपयोग में आ सके उस हेतु पूज्य राष्ट्रसन्तश्री की प्रेरणा से इस संस्था को सुरक्षित रखने हेतु दी थी। हमारे यहाँ से भी प्राचीन हस्तप्रतों की नकल जब किसी को दी जाती है, तब उस प्रत के मूल स्रोत स्वरूप उस संघ व ज्ञानभंडार का नाम क्वचित ही बतलाया जाता है, जबकि यह सूचना हमारे कम्प्यूटर में संग्रहित ही है। हमने तो कुछ वर्षों से ही यह विरासत सम्हाली है, जबकि उन्होंने तो अनेक प्रयत्न करके सैकड़ों वर्षों से इस धरोहर को सुरक्षित रखा था और संवर्धित किया था। हम उन सभी संघों एवं ज्ञानभंडारों से भी यहाँ क्षमा याचना करते हैं कि उनका नामोल्लेख वाचकों के समक्ष हमने नहीं किया। हम अब से इस क्षति को सुधार कर रहे हैं और आगे से उन हस्तप्रतों की नकल विद्वानों को देते समय उन्हें उन प्रतों के यथोपलब्ध मूल प्राप्ति स्रोत के बारे में भी बतलाएंगे एवं अनुरोध करेंगे कि उन प्राचीन ज्ञानभंडारों का नामोल्लेख भी उनकी पुस्तक आदि में यथायोग्य अवश्य करें।

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्त कुमार

पुस्तक नाम-चरम केवली, **सूत्रकार**-विभिन्न श्रमण भगवन्त तथा श्रावक, **संपादक**-श्री तीर्थभद्रसूरिजी, **प्रकाशक**-श्री श्रमण सेवा रिलीजियस ट्रस्ट, ध्रांगध्रा, **आवृत्ति**-प्रथम, **प्रकाशन वर्ष**-२०७५, **भाग**-१ से ६, **भाषा**-देशी, **विशेषता**- अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामी सम्बन्धी वैराग्यवर्द्धक साहित्य का संकलन।

परमात्मा श्री महावीरस्वामी के द्वितीय पाट पर विराजमान इस अवसर्पिणी काल के अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामी का चरित्र इतना अद्भुत है कि उनके जीवन की प्रत्येक घटना वैराग्य से परिपूर्ण नजर आती है। श्रमण परम्परा के मध्य एक अनुपम व्यक्तित्व के रूप में स्थापित श्री जम्बूस्वामी का जीवन परिलक्षित होता है। भोग-विलास की समग्र सामग्री जिसके समक्ष उपस्थित हो और वह व्यक्ति आत्मचिन्तन में तल्लीन हो, ऐसा मदनविजेता भला और कहाँ मिलेगा ! जम्बूस्वामी अर्थात् वैराग्य का ऐसा चमकता सितारा जिसने मात्र एक रात्रि में ८-८ नवयौवनाओं और प्रभव आदि ५०० चोरों के हृदय का अंधकार दूरकर उसे वैराग्य के प्रकाश से जगमगा दिया था। अपने तन-मन-धन को पूर्ण सुरक्षित रखते हुए रात्रि के घोर अन्धकार में लूटने आई स्त्रियों को और चोरों को अपने पास बिल्कुल फरकने नहीं दिया। उनके चित्त को न तो स्त्रियाँ लूट सकीं और न ही उनके धन को चोर चुरा सके। किन्तु उन्होंने आर्य संस्कृति का पालन करते हुए उनलोगों को खाली हाथ नहीं लौटने दिया, बल्कि उन सभीको अपने वैराग्यरस का पान कराकर सन्तुष्ट कर दिया।

ऐसे महान वैरागी जम्बूस्वामी के जीवन चरित्र का अनेक श्रमण भगवन्तों तथा श्रावकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से अनेक भाषाओं में वर्णन करते हुए उसे जन-जन तक पहुँचाने का महान उपकार किया है। उन्हीं जीवन वर्णनों में से प्राचीन मध्यकालीन देशी भाषाओं की कुल ४६ कृतियों का संकलन कर उन्हें इस पुस्तक के ६ भागों में प्रकाशित किया गया है। जिसमें ३४ कृतियाँ प्रथम बार प्रकाशित हुई हैं तथा १२ कृतियों को संशुद्ध करके पुनः प्रकाशित किया गया है।

प्रथम भाग में परमात्मा महावीर का वर्णन, जंबूस्वामी चरित्र विषयक रचनाओं का वर्णन, कृति एवं कृतिकारों का परिचय, जंबूस्वामी चरित्र चित्रावली तथा चित्र परिचय एवं १६ कृतियाँ प्रकाशित की गई है। द्वितीय भाग में चित्र तथा चित्र परिचय के साथ कुल ४ कृतियाँ प्रकाशित की गई हैं। तृतीय भाग में चित्र तथा चित्र परिचय के साथ कुल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

५ कृतियाँ प्रकाशित हैं, चतुर्थ भाग में चित्र तथा चित्र परिचय के साथ कुल ६ कृतियाँ प्रकाशित हैं, पंचम भाग में चित्र तथा चित्र परिचय, १५ कृतियों के साथ परिशिष्ट में संस्कृत प्राकृत उद्धरणों का अकारादि क्रम, देशीओं का अकारादि क्रम, जंबूस्वामी कथा का विभागीकरण आदि प्रकाशित हैं एवं षष्ठ भाग में शब्दकोश दिया गया है।

इस पुस्तक में बड़े एवं सुस्पष्ट अक्षरों में प्रकाशित कृतियाँ वैराग्यवर्द्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल सिद्ध होंगी। कथा से सम्बन्धित रंगीन चित्र भी कृति के अनुरूप ही है। इस ग्रन्थ का अध्ययन करने वालों के मन में वैराग्य की भावना तीव्र होगी और वे अपने कर्मों की निर्जरा के लिए वैराग्य मार्ग के अवलम्बन हेतु अग्रसर होंगे।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर का सौभाग्य है कि इस भगीरथ कार्य में पूज्यश्री को किसी तरह से सहयोगी हुआ जा सका है। यह लाभ देने के लिए हम पूज्यश्री के अंतःकरण से आभारी है। ज्ञानमन्दिर परिवार उनके इस कार्य की भूरि-भूरि अनुमोदना करते हुए उनसे इसी प्रकार के और साहित्य की अपेक्षा रखता है। आशा है पूज्यश्री भविष्य में इसी प्रकार उत्तम साहित्य का सम्पादन व सृजन करते हुए संयमजीवन की उच्चता को प्राप्त करेंगे।

❊ ♦ ❊

समाचार सार

राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्यदेव श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का प्रह्लादनगर जैनसंघ में मंगल प्रवेश

राष्ट्रसन्त परमपूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का पूज्य गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी म.सा., साध्वीवर्या मुक्तिरत्नाश्रीजी म. सा. आदि शिष्य-प्रशिष्यों के साथ दि. ७-२-२०२१ को हर्षोल्लास पूर्वक श्री प्रह्लादनगर जैनसंघ, सेटेलाईट में प्रवेश हुआ। प्रवेशयात्रा, विशाल टावर से शुरु हुई जिसमें जैन एलर्ट ग्रुप के बैन्ड की मधुर ध्वनि के बीच श्रीसंघ की बालिकाएँ सिर पर मंगलकलश लिए चल रही थी। महिलामंडल के द्वारा स्वागतगान किया गया। पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने मूलनायक श्री सीमन्धरस्वामी के दर्शन किए। शंखलपुर से दर्शनार्थ लाई गई श्री पार्श्वनाथ प्रभु की चमत्कारिक प्रतिमा की मुखाकृति के दर्शन कर सभी भावविभोर हो गए।

संघ के महान उपकारी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्रीकैलाससागरसूरीश्वरजी महाराजा की दीक्षातिथि के उपलक्ष में आयोजित इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम गुरुवन्दन किया गया, तत्पश्चात् पूज्य गच्छाधिपतिश्री की गुरुस्तुति की गई। उसके बाद उपकरण वन्दनावली कार्यक्रम के अन्तर्गत सभी उपकरणों के दर्शन कराए गए। जॉलीबेन दिनेशभाई

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पांडेचीया परिवार द्वारा पूज्य राष्ट्रसन्तश्री को मुख्य उपकरण रजोहरण दर्शनार्थ अर्पण किया गया। उसके बाद दीपिकाबेन दिलीपभाई शाह ने पूज्य राष्ट्रसन्तश्री को गुरु गौतमस्वामी का पात्रा दर्शनार्थ अर्पण किया। श्रीसंघ के आदेश से श्रीमती मंजूदेवी मेघराजजी कोचर (बीकानेरवाला) हाल अहमदाबाद हस्ते अनुबेन मनीषभाई कोचर परिवार ने पूज्य राष्ट्रसन्तश्री को तथा उपस्थित साधु-साध्वीजी भगवन्तों को कामली वोहराया।

साणंद से सागरगच्छ मंदिर हेतु वहाँ के श्रावक-श्राविकाएँ ९९वीं ध्वजा लेकर आए थे, जिसके ऊपर पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने वासक्षेप विधान किया। साणंद श्रीसंघ ने १००वीं ध्वजारोहण (शताब्दी महोत्सव) के प्रसंग पर पूज्यश्री को पधारने हेतु आग्रहभरी विनती की, श्रीसंघ की भावना देखकर तथा साणंद संघ के उपकारों का स्मरण कर पूज्यश्री ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। जिसे सुनते ही समस्त श्रीसंघ आनन्द से झूम उठा। ज्ञातव्य है कि साणंदनगर में ही राष्ट्रसंत की दीक्षा हुई थी। प्रह्लादनगर श्रीसंघ के संस्थापक पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने उपस्थित भक्तगण को अपनी हृदयस्पर्शी वाणी से सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के अन्त में विश्व हिन्दु परिषद् के कार्यकर्त्ताओं को कार्यक्रम में उपस्थित पार्श्व कॉर्पोरेशन के श्री जयन्तीभाई पटेल, कोबातीर्थ के कार्यवाहक धनेशभाई, विश्वनंदीकर संघ के श्री केतनभाई शाह तथा प्रह्लादनगर संघ के ट्रस्टीगण के द्वारा श्रीरामजन्मभूमि में मन्दिर निर्माण हेतु निधि अर्पण की गई, जिसमें श्री जयन्तीभाई पटेल का अनुमोदनीय योगदान रहा।

गाँधीनगर के पास स्थित श्री वलाद जैनसंघ के श्रावक-श्राविकाओं ने पूज्य राष्ट्रसन्तश्री की निश्रा में जिनालय के जीर्णोद्धार का संकल्प लिया। लाभार्थी वलाद श्रीसंघ के श्री मुकेशभाई शाह परिवार ने पूज्य गुरुभगवन्त के पास आशीर्वाद ग्रहण किया।

इस शुभ अवसर पर औडा के भूतपूर्व चेयरमैन श्री सुरेन्द्रभाई शाह ने भी पूज्य गुरुभगवन्त के दर्शनार्थ पधारकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रवचन के अन्त में पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी महाराजा के गुणों की अनुमोदना करते हुए कहा कि उनके अन्दर प्रत्येक सम्प्रदाय के साधु-साध्वी भगवन्तों के प्रति सेवा की तत्परता थी। उनके जीवन में निःस्पृहता थी। वे आत्मसाधक महापुरुष थे। इस प्रकार उनके गुणों का वर्णन करते हुए पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने श्रीसंघ को आशीर्वाद प्रदान किया और कहा कि श्रीसंघ की सदा उन्नति हो, पारस्परिक प्रेमभाव बना रहे। शासन के कार्यों में योगदान होता रहे। अन्त में श्रीसंघ में पधारे हुए सभी महानुभावों का संघपूजन तथा स्वामीवात्सल्य किया गया।

पुष्पदन्त श्वे. मू.पू. जैनसंघ में अन्नपूर्णा संकुल का भव्य उद्घाटन

राजनगर की धन्य धरा पर सेटेलाइट विस्तार में दि. १६-२-२०२१ मंगलवार को माघ शुक्ल पंचमी (बसन्तपंचमी) के दिन राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की शुभ निश्रा में तथा पूज्य आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी म. सा. व पूज्य गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी म. सा. की उपस्थिति में नूतन स्वामिवात्सल्य भवन, आयंबिलशाला, भोजनशाला, धर्मशाला तथा पाठशाला से युक्त अन्नपूर्णा संकुल का भव्य उद्घाटन किया गया। प्रातः ६:३०बजे श्री संभवनाथ दादा के दरबार में शक्रस्तव का पाठ किया गया, उसके बाद ध्वजपूजा करके तीन प्रदक्षिणा की गई। श्रावक-श्राविकाओं ने अक्षत से बधाया और मंगल मंत्रोच्चारपूर्वक दादा की ध्वजा चढाई गई। तत्पश्चात् चतुर्विध संघ की उपस्थिति में राष्ट्रसन्त पूज्यश्री ने महामांगलिक सुनाया, पूज्य मुनि श्री हर्षपद्मसागरजी म. सा. ने बड़ी शान्ति का पाठ सुनाया। पूज्य आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी म.सा. ने श्री संघ की उन्नति हेतु आशीर्वाद दिए और मंगलकामना व्यक्त करते हुए कहा कि श्रीसंघ की उत्तरोत्तर वृद्धि हो, शासन के कार्य में संघ ने खूब सहयोग किया है।

पुष्पदंत संघ के ट्रस्टी श्री कल्पेशभाई वी. शाह ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि श्रीसंघ में प्रथम बार पूज्यश्री कि निश्रा में यु.एन.महेता उपाश्रय और नूतन संकुल का उद्घाटन किया गया। पूर्णाबेन की स्मृति में अन्नपूर्णा संकुल का श्री अनिलभाई महेताने लाभ लिया। स्वामीवात्सल्य संकुल के लाभार्थी शांतिलालजी मिश्रीमलजी मुणोत, भोजनशाला के लाभार्थी श्री गणपतजी चौधरी, आयंबिल शाला के लाभार्थी दीपकभाई कापडिया तथा कल्याणसागर पाठशाला के लाभार्थी चेतनाबेन सुरेशभाई शाह (टींटोडावाले)।

पूज्य राष्ट्रसंत ने अपने प्रवचन में कहा कि "श्रीसंघ के पुण्य से शुभ कार्य होते है। श्रीसंघ को कल्पेशभाई वी. शाह जैसे कार्यकर्ता मिले है। जो शासन कार्य में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे है। श्रीसंघ की खूब उन्नति हो, परस्पर प्रेमभाव बना रहे यही मंगलकामना और शुभाशीर्वाद"।

इस प्रसंग में नाकोडा के चेरमेन श्री रमेशजी मुथा, गुजरात समाचार के श्रेयांसभाई, स्मृतिबेन, आणंदजी कल्याणजी पेढी के ट्रस्टी श्री श्रीपालभाई आर. शाह तथा राजनगर व गांधीनगर संघ के ट्रस्टी भी पधारे थे, जिन्होंने पूज्य साध्वीजी म. सा. के चातुर्मास हेतु विनंती की, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया।

श्री गणपतजी चौधरी ने कहा की गुरु भगवंत का वर्षों से हमारे परिवार पर उपकार रहा है। श्री कल्पेशभाई वी. शाह ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। संघ के ट्रस्टी श्री मनिषभाई (टू वेल्यु) तथा श्री शांतिलालजी मिश्रीमलजी मुणोत की ओर से गुरु भगवंत को कामली अर्पण किया गया।

कार्यक्रम के अन्त में उपस्थित गुरुभक्तों ने राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्यदेव से आशीर्वाद ग्रहण किये।

For Private and Personal Use Only

राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में प्रहलादनगर जैन संघ, अहमदाबाद में रामजन्मभूमि मंदिर के निर्माण हेतु विश्वहिंदु परिषद को निधि अर्पण करते हुए श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के ट्रस्टीगण आदि.

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

चारित्रचूडामणि पूज्य आचार्यदेव श्री कैलाससागरसूरीश्वरजी महाराजा
को दीक्षादिवस (दि.७-२-२०२१) के अवसर पर कोटिशः वन्दन.

BOOK-POST / PRINTED MATTER
प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat.
And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and
Published at : SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. **Editor :** HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only